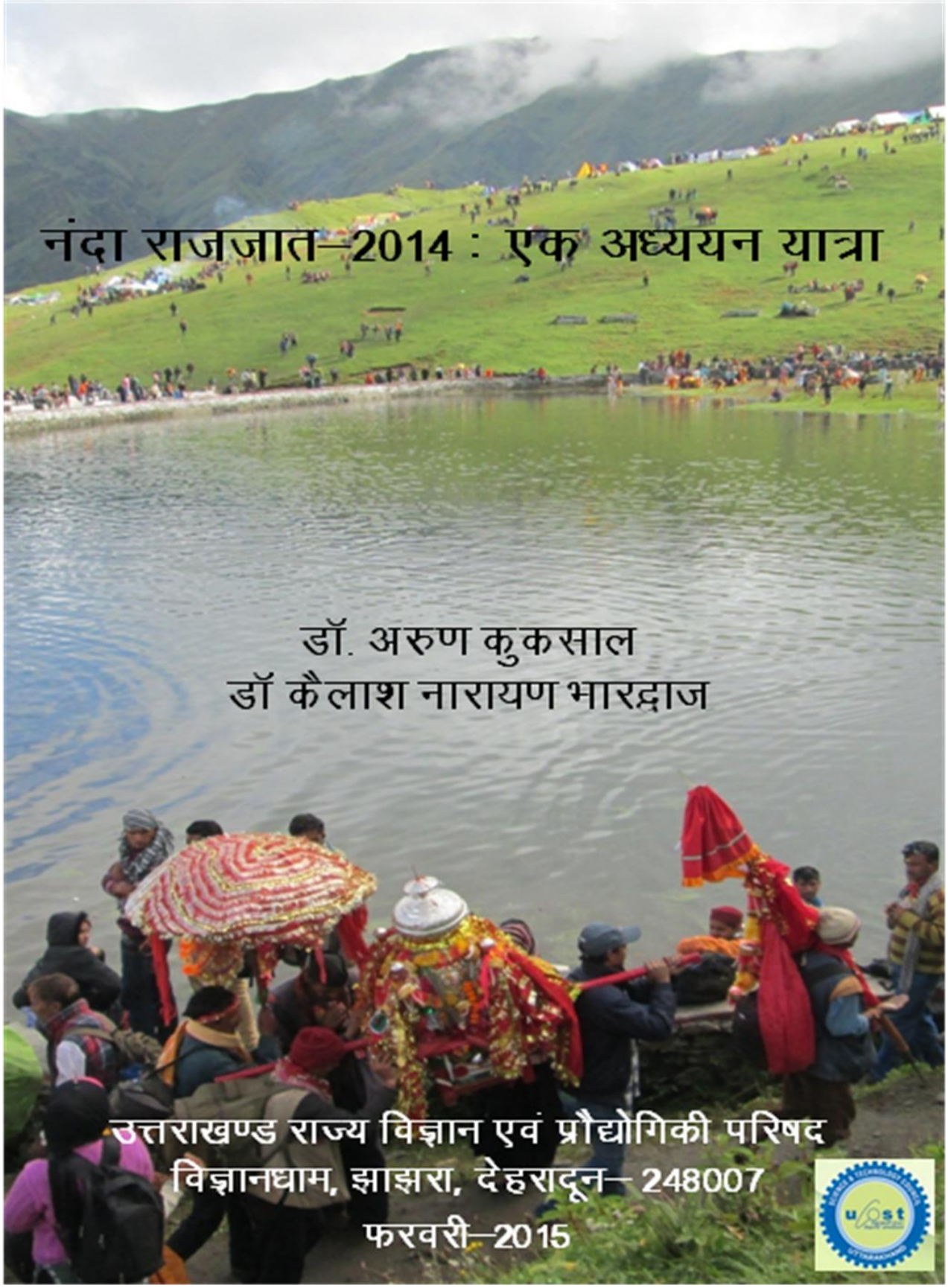

नंदा राजजात–2014 : एक अध्ययन यात्रा

डॉ. अरुण कुकसाल
डॉ कैलाश नारायण भारद्वाज

उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद
विज्ञानधाम, झाझरा, देहरादून– 248007
फरवरी–2015

प्राक्कथन

उत्तराखण्ड की गौरवशाली सांस्कृतिक नन्दा राजजात जो कि 18 अगस्त से 7 सितम्बर 2014 तक आयोजित की गयी में परिषद के वैज्ञानिक अधिकारी डॉ0 अरुण कुकसाल एवं डॉ0 कैलाश नारायण भारद्वाज ने अध्ययनकर्ता के रूप में भाग लिया। विश्व की सबसे लम्बी पैदल (280 किमी.) इस महान धार्मिक यात्रा में उत्तराखण्ड के साथ–साथ देश–दुनिया के हजारों लोगों ने अपने–अपने तरह से यथा– यात्री, पर्यटक, घुमन्तू, जिज्ञासू, शिक्षार्थी, शोधार्थी, वैज्ञानिक, समाज वैज्ञानिक और व्यवस्थापक बतौर भाग लिया। उल्लेखनीय है कि नन्दादेवी राजजात गौरवशाली होने के साथ चुनौतीपूर्ण भी हैं। क्योंकि चरम रहस्य, रोमांच और आस्था की यह यात्रा हिमालयी पारिस्थितिकी संवेदनशीलता, मानवीय जीवन, राज्य की गरिमा तथा प्रशासनिक व्यवस्था को कई आयामों से प्रभावित करती है।

अध्ययन यात्रा के उपरान्त यूकॉस्ट के वैज्ञानिकों द्वारा नंदा राजजात के पर्यावरणीय पक्ष, यात्रा का स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान, यात्रा में शामिल संस्थाओं की भूमिका तथा आगामी राजजात के सफल आयोजन हेतु सुझावों के दृष्टिगत एक रिपोर्ट– 'नंदा राजजात–2014: एक अध्ययन यात्रा' तैयार की है।

निःसंदेह, यूकॉस्ट के वैज्ञानिकों की यह रिपोर्ट नंदा राजजात के बहुआयामी पक्षों को उजागर करती है। नंदा लोकजात एवं राजजात को उत्तराखण्ड की आर्थिकी से जोडने एवं भविष्य में आयोजन को अधिक कारगर बनाने के सुझावों की ओर भी इंगित करती है।

(डॉ0 राजेन्द्र डोभाल)
महानिदेशक

नन्दाराजजात : आस्था, रहस्य और रोंमाच की अद्भुत यात्रा

हिमालयी क्षेत्र के मध्य में स्थित उत्तराखण्ड की संस्कृति भारतीय संस्कृति की ही अनुगामी है। हिमालय क्षेत्र की प्राकृतिक छटा के साथ ही भौगौलिक दुरूहता ने यहॉ के सांस्कृतिक वैभव को एक अलग ही आयाम प्रदान किया, जो यहॉ की लोक–संस्कृति के रूप में जीवन्त है। यहॉ खेत–खलिहानों में काम करने से लेकर विवाह जैसे अपेक्षाकृत विशाल आयोजन में सामाजिक सक्रियता एवं सहयोग का दिग्दर्शन होता है और इसी सामाजिक सहयोग ने किसी भी कार्य के शास्त्रीय विधान से इतर लौकिक विधान का प्रतिपादन किया है, जो मध्य हिमालय के सांस्कृतिक वैभव को एक अलग ही पहचान देता है।

किसी भी क्षेत्र, प्रान्त अथवा देश की संस्कृति का विकास वहॉ का लोकजीवन होता है। उत्तराखण्ड की संस्कृति में भी यहॉ के लोकजीवन की व्याप्ति परिलक्षित होती है। पूर्व काल में मध्य हिमालयी क्षेत्र में यहॉ की भौगौलिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों के कारण नगरों का विकास मैदानी क्षेत्रों सदृष नहीं हो पाया था। इस क्षेत्र में आज जो नगर वर्तमान स्वरूप में परिलक्षित होते हैं, वे किसी न किसी गॉव का ही विकसित रूप हैं। अतः उत्तराखण्ड की संस्कृति की आत्मा यहॉ के ग्राम्य–जीवन में निवास करती है। यहॉ की संस्कृति मूलतः लोकसंस्कृति है और यह हिमालयी लोक–संस्कृति यहॉ की प्राकृतिक विविधता को भी एक सूत्र में बॉधे हुए है। पूरब में काली नदी से लेकर पश्चिम में टोन्स नदी तक बिखरा हुआ सम्पूर्ण मध्य हिमालयी लोकजीवन वाह्य वैविध्य और बहुरूपता का आभास तो कराता है किन्तु वास्तव में यह सम्पूर्ण क्षेत्र आन्तरिक एकता और अनन्यता के आलोक से प्रकाशमान है, जो यहॉ की लोक–संस्कृति की महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

समाज या क्षेत्र के लोकजीवन की सांस्कृतिक विशिष्टता उसमें प्रचलित लोकविश्वासों से उद्घाटित होता है। लोकविश्वास लोकजीवन से जुड़ी वे मान्यतायें या आस्थायें हैं, जो परंपरा से प्राप्त होती हैं। कौन सा लोक विश्वास कब, कैसे और क्यों चल पड़ा, सामान्यतया इसका लेखा – जोखा नहीं मिलता। लोक विश्वासों का संबधं लोकमानस से होता है। इसके पीछे तर्क शक्ति क्रियाशील नहीं रहती। इनका आधार विशुद्ध मनोवैज्ञानिक होता है। प्रारंभ में लोकविश्वासों के पीछे भय एवं आकस्मिक संयोग मुख्य कारण रहे होंगे। बाद में परंपरा का अंग बन जाने से, संस्कार रूप में अवस्थित हो जाने के कारण, सामाजिक जीवन में पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे हैं।

वास्तव में लोकविश्वास, आस्थायें एवं परम्परायें किसी भी सामाजिक जीवन की अनुभवों से अर्जित वे संचित अक्षय पूंजी होते हैं, जिन्हें अगली पीढ़ी स्वाभाविक अंगीकृत कर लेती है या फिर वे स्वतः ही हस्तांतरित हो जाते हैं। लोकविश्वास लोकजीवन की लोक – परलोक सम्बन्धी आस्थाओं एवं संकल्पनाओं का मूर्त रूप हैं।

किसी मानव समाज या उसके किसी वर्ग विशेष में प्रचलित विश्वास एवं मान्यताएं उसके ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण को समझने में सहायक होते हैं। लोक विश्वासों तथा मान्यताओं का उद्भव, संवर्धन एवं संरक्षण समाज विशेष के सदस्यों की अपनी व्यक्तिगत एवं सामूहिक अनुभूतियों, संकल्पनाओं तथा सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण के अनुरूप हुआ करता है। कालान्तर में उस समाज के सभी या अधिकतर व्यक्तियों के द्वारा उसके प्रति एक मान्यता के बन जाने से वह एक सार्वभौम विश्वास/आस्था का रूप धारण कर पूरे समाज में स्थायित्व प्राप्त कर लेता है तथा उनके चेतन/अवचेतन मानस में ऐसी जड़ें जमा लेता है कि कालान्तर में उसकी तत्कालीन परिस्थितियों में आमूलचूल परिवर्तन आ जाने पर भी वह अन्तर्मन में निहित उसके प्रभाव से सर्वथा मुक्त नहीं हो पाता है।'

उत्तराखण्ड समाज में प्रचलित लोकविश्वासों के अनुरूप देवभावना जगजाहिर है। अद्वितीय नैसर्गिक सुन्दरता भरपूर यह क्षेत्र देवी – देवताओं, ऋषियों – मुनियों, साधु–सन्तों के साथ–साथ अनुपम लोकदेवी–देवताओं की जन्म या कर्मस्थली रही है। देवभूमि तभी तो इसको कहा जाता है। लोक–देवी एवं देवताओं की एक व्यापक परम्परा विद्यमान है। उत्तराखण्ड के प्रमुख लोकदेवी–देवताओं में नन्दा, सुनन्दा, सुरकुण्डा, कुंजापुरी, चन्द्रबदनी, पूर्णागिरी, जियाराणी, झूला देवी, भ्रामरी, गढ़देवी, ऊफरांई देवी, अनुसूया, झालीमाली, धारी, कसंर्मदनी, गुरूना, नृसिंह, भैरव, नार्गजा, हरु, सैम, गोरिल, कलबिष्ट, सिद्वा–विद्वा, गंगनाथ, ऐडी, चौमू, भूमिया, भ्वलनाथ, गंगनाथ, आदि है।

उत्तराखण्ड समाज के लोकदेवी–देवताओं में नन्दा को सर्वाधिक महत्वा प्रदान की गयी है। लोकदेवियों में वह और भी कई नामों से जानी जाती है। उत्तराखण्ड में जन–जन के मानसपटल पर मां, बहिन, बेटी, बहू, आदि के रूप में नन्दा विराजमान है। वह हिमालय की बेटी है और हिमालय की मां भी । वह उत्तराखण्ड के प्रचीन शासक कत्यूरियों, चन्द और परमारों की कुल देवी भी है तो बेटी भी। नन्दा नियन्ता भी है तो निरीह भी। वह आस्था, उल्लास और उदासी की देवी है। मध्य हिमालय के कई हिमशिखर, नदियां, स्थान, कुण्ड, आदि नन्दा के नाम से प्रतिष्ठित हैं। यथा– नन्दादेवी, नन्दाकोट, नन्दावन, नन्दाखाट, नन्दा त्रिशूली, नन्दा घुंघटी, नन्दाकिनी, मन्दाकिनी, अलकनन्दा, नन्दप्रयाग, नन्दकेशरी, नन्दाखेत, नन्दासैंण, नन्दाक, नन्दाशिला, नन्दीकुण्ड, रूपकुण्ड, होमकुण्ड आदि। वास्तव में उत्तराखण्ड की सभी लोकदवियों नन्दा की प्रतिरूप हैं। सुरकुण्डा, कुंजापुरी, चन्द्रबदनी, पूर्णागिरी, जियाराणी, झूला देवी, भ्रामरी, गढ़देवी, ऊफरांई देवी, अनुसूया, झालीमाली, धारी, कसंर्मदनी, गुरूना आदि नन्दा के रूप हैं।

लोगों की नन्दा के प्रति इतनी गहरी आस्था है कि उत्तराखण्ड के कोने–कोने में प्रतिवर्ष नन्दा लोकजात तथा 12 वर्ष के उपरान्त नन्दा राजजात का आयोजन किया जाता है। उत्तराखण्ड में प्रतिवर्ष भाद्रपद माह की नन्दाष्टमी के अवसर पर नन्दा उत्सव/नन्दापाती/नन्दालोक जात का आयोजन किया जाता है। विशेषकर नन्दा देवी

शिखर के तीन ओर के इलाके यथा–पिथौरागढ़, बागेश्वर और चमोली जनपदों में स्थानीय लोग नजदीकी बुग्यालों तक नन्दा की डोलियां लेकर पहुंचते हैं। वैसे मुख्य नन्दादेवी लोकजात प्रतिवर्ष कुरुड़ गांव से वेदिनी बुग्याल तक जाती है।

नन्दा राजजात 12 वर्ष के उपरान्त आयोजित की जाती है। नौटी गांव से प्रारम्भ यह यात्रा आटागाड़, पिण्डर और केल नदियों की घाटियों के साथ–साथ वेदनी बुग्याल, पातर नचौणियां, गैरोली पातल, भगुवावासा, रूपकुण्ड, ज्यूंरागली, शिलासमुद्र के दुर्गम रास्तों से आगे बड़ती हुयी होमकुण्ड (कैलाश) में विराजती है। होमकुण्ड (समुद्रतल से 17000 फीट की ऊंचाई) त्रिशूल पर्वत की तलहटी पर स्थित है और नन्दाकिनी नदी का उद्‌गम स्थल है। होमकुण्ड से वापसी में यह यात्रा नन्दाकिनी नदी के किनारे–किनारे उतरती हुयी चन्दनियाघट, लाटूखोपड़ी, सुतोल होती हुयी घाट पहुंचती है। घाट से नन्दप्रयाग और कर्णप्रयाग होते हुए वापस अपने प्रारम्भ स्थल नौटी गांव में समाप्त होती है। विश्व की प्रमुख धार्मिक यात्राओं में शामिल नन्दा राजजात (जाना और आना) की दूरी 280 किमी. है, जिसमें 220 किमी. पैदल तथा 60 किमी. सड़क मार्ग से वाहन द्वारा तय की गयी दूरी शामिल है। यह संम्पूर्ण यात्रा पथ 20 पड़ावों में पूरा किया जाता है।

नन्दा राजजात मूलतः लोकदेवी नन्दा को मायके से ससुराल भेजने की धार्मिक परम्परा है। नन्दा की बेटी के रूप में विदाई की यह यात्रा नारी के सम्मान, स्वाभिमान, और *'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः'* कथन का अद्वितीय उदाहरण है। इस संम्पूर्ण जात का नेतृत्व प्रमुखतयाः कांसुवा, नौटी और कुरुड़ गांव के ग्रामीणों द्वारा किया जाता है। लोकजात में सबके आर्कषण एवं आस्था का केन्द्र पथप्रर्दशक चौसिंग्या खाडू रहता है। छतौली, डोली और निशाण यात्रा के प्रमुख अंग हैं। इस यात्रा में नन्दा देवी के साथ अन्य स्थानीय देवी–देवताओं की डोली, छतौली और निशाण भी चलते हैं।

देवी के मायके के इलाके से रिंगाल की छतौली तथा ससुराल पक्ष से भोजपत्र की छंतौली लेकर लोग जात में शामिल होते हैं। जनश्रुतियों के अनुसार राजजात का प्रारम्भ 8वीं शताब्दी में राजा कनकपाल के राज्यकाल में हुआ। वैसे नन्दा राजजात कब से प्रारम्भ हुयी, इसके पुष्ट प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। विभिन्न कालखण्डों में यह यात्रा बाधित होती रही है। ऐतिहासिक दस्तावेजों के अनुसार 19वीं शताब्दी में सन् 1820, 1843, 1863,1886 में राजजात होने का विवरण मिलता है। उसके बाद 20वीं शताब्दी में सन् 1905, 1925, 1951, 1968,1987 और 2000 में इसका आयोजन हुआ। इसी तारतम्य में 21वीं शताब्दी की पहली नन्दा राजजात 18 अगस्त से 7 सितम्बर 2014 तक आयोजित की गयी।

श्रीनन्दादेवी राजजात– 2014

सुविज्ञ है कि उत्तराखण्ड की गौरवशाली सांस्कृतिक नन्दाराज जात 14 साल बाद 18 अगस्त से 7 सितम्बर 2014 तक आयोजित की गयी। इससे पूर्व 22 अगस्त से सितम्बर 2000 तक नन्दा राजजात आयोजित की गई थी। विश्व की सबसे लम्बी पैदल इस महान धार्मिक यात्रा में उत्तराखण्ड के साथ–साथ देश–दुनिया के हजारों लोगों ने अपने–अपने तरह से यथा– यात्री, पर्यटक, घुमन्तू, जिज्ञासू, शिक्षार्थी, शोधार्थी, वैज्ञानिक, समाज वैज्ञानिक और व्यवस्थापक बतौर भाग लिया। इन संदर्भो में यह यात्रा उत्तराखण्ड की परम एवं विशिष्ट परम्पराओं के साथ–साथ मानवीय संवेदनाओं और सरोकारों को भी रेखाकिंत करती है।

नन्दादेवी राजजात का आयोजन करना गौरवशाली होने के साथ चुनौतिपूर्ण भी रहा हैं। क्योंकि चरम रहस्य, रोमांच और आस्था की यह यात्रा हिमालयी पारिस्थितिकी संवेदनशीलता, मानवीय जीवन, राज्य की गरिमा तथा प्रशासनिक व्यवस्था को कई आयामों से प्रभावित करती है। उत्तराखण्ड सरकार ने यात्रा संचालन की कठिन चुनौती को आत्मसात करते हुए इसे राज्य के सर्वागींण विकास के लिए एक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी अवसर माना। शासन–प्रशासन एवं नन्दा राजजात के आयोजक राजजात समिति की प्रारम्भ से ही यह कोशिश रही कि नन्दा राजजात अपनी विशिष्ट पहचान के रूप में लोकप्रिय हो। साथ ही विगत आपदाओं से ग्रसित उत्तराखण्ड राज्य से यात्रा और पर्यटन के दृष्टिगत अनुकूल और बेहतर वातावरण का संदेश नन्दा राजजात के बहाने देश–दुनिया में जाना जरूरी समझा गया। अतः नन्दा राजजात को अति महत्वपूर्ण आयोजन मानते हुए उत्तराखण्ड शासन–प्रशासन ने ठोस कारगर रणनीति अपनाई। इसके अन्तर्गत नन्दा राजजात क्षेत्र में यात्रा से पूर्व अवस्थापना सुविधाओं का विकास एवं विस्तार, यात्रा के दौरान प्रबंधकीय व्यवस्थायें एवं हिमालय की पारिस्थिकीय संवेदनशीलता के दृष्टिगत कड़ी निगरानी तथा यात्रा के उपरान्त की व्यवस्थाओं का सुचारू संचालन शामिल था।

उक्त परिपेक्ष्य में नन्दा राजजात के आयोजन से हिमालयी पारिस्थितिकीय संवेदनशीलता पर पड़ने वाले प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन कराया जाना आवश्यक समझा गया। इसके अन्तर्गत यात्रा संचालन अवधि में पर्यावरणीय, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन की रूपरेखा तैयार की गयी। तदोपरान्त विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, उत्तराखण्ड की प्रतिनिधि संस्था उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (यूकॉस्ट) के दल ने इस यात्रा में वैज्ञानिक अध्ययन यात्रा हेतु सक्रिय रूप में प्रतिभाग किया।

अध्ययन यात्रा के प्रमुख बिन्दु

1. यात्रा का पर्यावरणीय पक्ष
2. यात्रा का स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान
3. यात्रा में शामिल संस्थाओं की भूमिका
4. आगामी वर्ष 2024 में प्रस्तावित यात्रा हेतु सुझाव

श्रीनन्दा राजजात–2014 का उक्त बिन्दुओं के दृष्टिगत अध्ययन करने हेतु अध्ययन कर्ताओं ने इस पूरी यात्रा को भोगोलिक आधार पर विश्लेषित किया। यह तथ्य सामने आया कि श्रीनन्दा राजजात–2014 अपने प्रस्थान स्थल नौटी से होमकुण्ड और वापस नौटी तक आने के लिए 20 पड़ावों से होकर गुजरती है। इन रात्रि पड़ावों को भोगोलिक दूरी एवं दुरूहता के आधार पर निम्न पांच भागों में समाहित किया गया।

1. नौटी से वाण	–	124 कि.मी.
2. वाण से वेदनी	–	13 कि.मी.
3. वेदनी से होमकुण्ड	–	34 कि.मी.
4. होमकुण्ड से सुतोल	–	24 कि.मी.
5. सुतोल से नौटी	–	85 कि.मी.

1. नौटी से वाण– 124 किमी. का यह मार्ग प्रमुखतया सड़क मार्ग से जुड़ा है। यद्यपि राजजात की मुख्य यात्री जो ड़ोली, छंतोली और निशाण लेकर चलते हैं, वे परम्परागत राजमार्ग से पैदल ही यात्रा करते हैं। राजजात के इस प्रारम्भिक हिस्से में पहले के 12 पड़ाव (ईड़ाबधानी, नौटी, कांसुवा, सेम, कोटी, भगोती, कुलसारी, चेपड़ियूं, नन्दकेशरी, फल्दियागांव, मुन्दोली, और वाण शामिल हैं) पूरे होते हैं। एक प्रकार से आधी यात्रा यहां तक पूरी हो जाती है। 12वां पड़ाव वाण अन्तिम आबादी वाला गांव है। वाण गांव के बाद संम्पूर्ण राजजात निर्जन स्थानों के लिए पैदल प्रस्थान करती है।

2. वाण से वेदनी– यह 13 किमी. का पथ है। जिसमें 2 पड़ावों (गैरोलीपातल और वेदनी बुग्याल) की यात्रा तय होती है। नन्दा राजजात का निर्जन स्थलों की ओर जाना यहीं से प्रारम्भ होता है। वाण गांव के बाद इस यात्रा के मुख्य पथप्रर्दशक का दायित्य लाटू देवता करते हैं। वाण के बाद रणकीधार, में यात्रा विश्राम करती है। रणकीधार से आगे चलकर कैल नदी पार कर लम्बी और खड़ी चढ़ाई का रास्ता शुरू हो जाता है। बांझ, बुरांश और देवदार के घने जंगलों से होते हुए जौंलधारा, नीलगंगा और शराहू पहाड़ी के बाद यात्रा का रात्रि विश्राम गैरोलीपातल में होता है। गैरोलीपातल से आगे यात्रा पथ में बुग्याल शुरू हो जाते हैं। गैरोलीपातल से मात्र 3 किमी. की दूरी पर वेदनी बुग्याल है। वेदनी के पास ही राजजात यात्रा पथ से हटकर आली बुग्याल है।

वेदनी और आली एशिया के सुन्दरतम बुग्यालों में हैं। यहां पर यह उल्लेख करना प्रासंगिक है कि वार्षिक नन्दा लोकजात वेदनी तक ही पहुंचती है।

3. वेदनी से होमकुण्ड– वास्तव में 34 किमी. का यह यात्रा पथ ही नन्दा राजजात का प्राण तत्व है। नन्दा लोकजात तो वेदनी तक प्रत्येक वर्ष आयोजित की जाती है। राजजात का महिमा वेदनी से आगे जाने पर है। इस पथ में दो पड़ाव यथा– पातर नचौंण्या और शिला समुद्र हैं। कैला विनायक, बगुवा बासा, गंगतोली गुफा, रूपकुण्ड और ज्यूँरागली महत्वपूर्ण स्थल हैं। वेदनी से पातर नचौंण्या 9 किमी. है। रास्ता खड़ी चढ़ाई का है। पातर नचौंण्या से रास्ता और भी दुर्गम हो जाता है। पातर नचौंण्या से 4 किमी. तीखी चढ़ाई के बाद धार पर कैला विनायक (गणेश जी) का पाषाण मन्दिर है, जिसमें चतुर्भुजी, एकदन्त, लम्बोदर भगवान गणेश ललितासन मुद्रा में बैठे हैं। पुरातत्व विशेषज्ञों ने इस मन्दिर का निर्माण 8वीं शताब्दी माना है। कैला विनायक से आगे बगुवा बासा तक का रास्ता घार–धार और ज्यादा ऊंचा–नीचा नहीं है। बाधों का बसेरा होने के कारण इस स्थल का नाम बगुवा बासा कहा जाने लगा। इस क्षेत्र में बह्मकमल बहुतायत पाये जाते हैं। बगुवा बासा के पास राजजात मार्ग से हटकर ऐतिहासिक महत्व का स्थल गंगतोली गुफा/बल्लभा स्वीलड़ा है।

बगुवा बासा से आगे यात्रा पथ पर रहस्य और रोमांच की अनुभूति देता रूपकुण्ड है। चारों ओर से पहाड़ियों सी घिरी यह झील समुद्रतल से लगभग 4778 मी. ऊंचाई पर स्थित हैं। इस झील में सैकड़ों नरकंकालों की उपस्थिति शताब्दियों पहले घटी किसी अनहोनी घटना का आभास कराती हैं। अनेक वैज्ञानिक परीक्षणों के बाद यह माना गया है कि रूपकुण्ड में विद्यमान नरकंकाल आज से लगभग 650 वर्ष पुराने हैं। रूपकुण्ड के एकदम ऊपरी चोटी पर जाने वाला रास्ता ज्यूंरागली है। गढ़वाली भाषा में ज्यूंरा मृत्यु/मौत को कहते हैं। भयानक खतरों का सामना करते हुए यात्री इस रास्ते को पार करते हैं। इसीलिए इस पूरे क्षेत्र को ही ज्यूंरागली कहा जाता है। ज्यूंरागली का टाप समुद्रतल से 17500 फीट ऊंचाई पर स्थित है, जो नन्दा राजजात यात्रा पथ का सबसे ऊंचा स्थल है। ज्यूंरागली से शिलासमुद्र तक उतराई का रास्ता है। यह इलाका फेनकमल, बह्म कमल, और तमाम जड़ी–बूटी के फूलों से लदा दिखाई देता है। शिला समुद्र एक ग्लेशियर है।

हजारों–लाखों सालों की बर्फ यहां समतल चट्टान के रूप में विद्यमान है। राजजात का रात्रि विश्राम यहीं होता है। शिला समुद्र से प्रातः यात्रीदल होमकुण्ड के लिए प्रस्थान करता है। उतार–चढ़ाव का यह रास्ता थकान और जोखिमभरा है। त्रिशूली शिखर की तलहटी पर पवित्र होमकुण्ड है। नन्दा राजजात का अन्तिम शिखर स्थल। होमकुण्ड में यज्ञ एवं अन्य औपचारिकताओं के बाद नन्दा देवी को विदाई देकर यहीं से राजजात वापसी के मुड़ती है।

4. **होम कुण्ड से सुतोल–** वापसी का यह यात्रा पथ 24 किमी. का है। इसमें पहला पड़ाव चन्दनियाघट और दूसरा पड़ाव सुतोल गांव है। रास्ते में इसके अलावा लाता खोपड़ी, धौसिंग मन्दिर एवं तातड़ा गांव महत्वपूर्ण स्थल हैं। उच्च शिखरों से बुग्यालों के रास्ते आते हुए यात्रियों की चाल स्वाभाविक रूप में तेज होती है। घर पहुंचने की उत्सुकता और उतराई का रास्ता होना कारण हो सकते हैं। चन्दनियाघट से लाटा खोपड़ी तक भोजपत्र और लाटा खोपड़ी से सुतोल तक रिंगाल के वनों से राजजात गुजरती है। सुतोल में नन्दाकिनी और रूपगंगा का संगम होता है।

5. **सुतोल से नौटी–** सुतोल से नौटी तक सड़क मार्ग से 85 किमी. है। सुतोल से यात्रा सड़क मार्ग के वाहनों में बैठकर होती है। सुतोल से चलकर राजजात का रात्री विश्राम घाट में होता है। अन्तिम दिन की राजजात यात्रा घाट से नौटी गांव तक पंहुच कर पूरी होती है। रास्ते में नन्दप्रयाग, विराजकुंज, लगांसू, कर्णप्रयाग महत्वपूर्ण राजजात स्थल हैं। नौटी में अगले दिन यज्ञ के बाद राजजात यात्रा का समापन हो जाता है।

नंदा राजजात–2014 के प्रमुख बिन्दु

- इस राजजात में होमकुण्ड तक 5 से 7 हजार यात्री पंहुचें जो कि अब तक सम्पन्न राजजातों में सर्वाधिक है। नंदा राजजात के सफलतापूर्वक आयोजन ने राज्य में आयी विगत आपदा के नकारात्मक प्रभावों को कम करने और पर्यटन की दृष्टि से देश–दुनिया में बेहतर संदेश दिया है।

- इस राजजात में 200 से अधिक देवी–देवताओं की डोली और छंतौलियां शामिल हुयी। पिथौरागढ़ जिले के जोहार क्षेत्र की नंदा देवी 54 साल बाद और 112 साल बाद लाता की 64 मुखी नंदा भी इस राजजात में शामिल हुयी।

- राजजात की व्यवस्था के लिए यात्रा मार्ग पर 52 पुल, 80 किमी. का ट्रेक रूट, 13 गावों में पेयजल आपूर्ति हेतु नयी पाइपलाइन, 100 से अधिक शौचालयों का निर्माण, किया गया।

- एसडीआरफ द्धारा यात्रा मार्ग के उच्च हिमालयी निर्जन क्षेत्रों में 7 पैरामेडिक्स को विशेष एवं आधुनिकतम ट्रेनिंग देकर सचल मेडिकल सुविधायें प्रदान की गई। इसके अर्न्तगत संपूर्ण यात्रा के दौरान 50 से अधिक मूर्छित और अति बीमार लोगों को सुरक्षित उपचार एवं स्थानों पर पंहुचाया गया।

- वाण से आगे यात्रा में शामिल होने के लिए यात्रियों के बायोमेट्रिक रजिट्रेशन और मेडिकल परीक्षण की व्यस्था की गई।

- अक्सा कम्पनी के सोलर लाईट की व्यवस्था लगभग हर पडाव पर की गई थी। इसके कारण एक बहुत बडे क्षेत्र में रोशनी होने से सभी व्यवस्थाओं को सुचारू करने में बडी मदद मिली।

- राजजात में मुख्य पडावों पर आशिंक रूप में यात्रियों के भोजन की व्यवस्था सरकार द्वारा भी की गई थी।

- यह आनुमानित किया गया कि इस राजजात में प्रत्यक्षतया एक लाख तथा अप्रत्यक्ष रूप से ढेड लाख लोगों ने किसी न किसी रूप में भागेदारी की है।

- यह भी आंकडा है कि राजजात के आयोजन से स्थानीय अर्थव्यवस्था में 60 से 75 करोड़ रुपये का टर्न ओवर हुआ है।

1. यात्रा का पर्यावरणीय पक्ष

उत्तराखण्ड के मध्य हिमालयी क्षेत्र से शुभारम्भ नन्दा राजजात–2014 ने उच्च हिमालयी क्षेत्र में पहुंच कर अपनी संपूर्णता को हासिल किया। यात्रा 18 अगस्त को अपने प्रस्थान स्थल नौटी (समुद्रतल से 1240 मी. ऊंचाई) से कई उतार–चढ़ावों को पार करती हुयी ज्यूंरागली (समुद्रतल से 5333 मी. ऊंचाई) से होकर 3 सितम्बर को होमकुण्ड (समुद्रतल से 4450 मी. ऊंचाई) में पहुंची। होमकुण्ड से उसी दिन याने 3 सितम्बर को दूसरे रास्ते (सितोल–घाट) से वापस लौटती हुयी 6 सितम्बर को नौटी पहुंची। लगभग 280 किमी. की इस यात्रा में लगभग एक लाख से अधिक लोग प्रत्यक्षतया शामिल हुये। निसंदेह इस यात्रा ने स्थानीय क्षेत्र विशेष को कई पर्यावरणीय पहलुओं से प्रभावित किया है। राजजात के लिए तमाम व्यवस्थाओं को सुचारू करने हेतु किये गये निमार्ण कार्यों, बडते हुए यातायात के दबावों, हजारों लोगों के चलने, खान–पान, प्रयोग के बाद इधर–उधर फेंके गयी वस्तुओं, से स्थानीय जीव–जन्तुओं, फसलों, वनस्पतियों और विशिष्ट प्राकृतिक वातारण को कई दृष्टियों से प्रभावित किया है। अति प्राकृतिक संवेदनशीलता वाले इस क्षेत्र को राजजात से हुए पर्यावरणीय परिर्वतनों एवं हानियों से उभरने में काफी समय लगेगा।

2. यात्रा का स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान

राजजात की भव्यता उत्तराखण्ड समाज की सांस्कृतिक–साामाजिक पहचान को एक वैश्विक आयाम देती है। साथ ही स्थानीय अर्थव्यवस्था को कई संदर्भो में पल्लवित और विकसित भी करती है। यह साफ देखा गया कि नंदा राजजात के दिनों में इस क्षेत्र के प्रत्येक गांव में वर्षों से खाली पडे घरों में रौनक आयी। लोगों ने अपने पुश्तैनी भवनों की मरम्मत की उसे आवश्यक सुविधायों से सुसज्जित किया। अनुमानतया राजजात क्षेत्र के एक हजार से अधिक भवनों को इस कारण नया जीवन मिला। कहना न होगा कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से यह कार्य लाभदायक रहा है। स्थानीय लोगों के लिए एक विशिष्ट एवं लाभकारी आर्थिक क्रियाकलापों की सौगात राजजात ने

प्रदान की है। यद्यपि राजजात में स्थानीय लोगों द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के मूल में आर्थिक लाभ लेना नहीं होता है। फिर भी यात्रियों के भोजन, आवास यातायात, स्थानीय उपजों एवं उत्पादों की बिक्री, सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि से आर्थिक लाभ पंहुचा है। एक सामान्य अनुमान के अनुसार इस पूरे आयोजन से स्थानीय अर्थव्यवस्था को 60 से 75 करोड़ रुपये का लाभ हुआ है। मात्र खाने–पीने एवं यात्रा संबंधी आवश्यक सामनों की खरीदारी पर ही हमारे अनुमान के अनुसार 5 करोड़ 40 लाख रूपये अनुमानित है।

3. यात्रा में शामिल संस्थाओं की भूमिका

यह ऐतिहासिक यात्रा सफलतापूर्वक अपने मुकाम तक बिना किसी विघ्न–बाधा के सम्पन्न हुयी। यह स्थानीय समुदाय के आपसी सौहार्द और परम सांस्कृतिक विरासत के प्रति अटूट निष्ठा और आस्था का प्रतिफल है। इसके साथ ही इस यात्रा के आयोजन से जुड़े राजजात समिति, शासन–प्रशासन, पुलिस, एसडीआरफ, आईटीबीपी, एसएसबी, निम व गैरसरकारी संस्थाओं में सुलभ इण्टरनेशनल, स्पैक्स, ने अपने–अपने दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया। यह संपूर्ण उत्तराखण्ड समाज की उपलब्धि ही है। नंदा राजजात–2014 के सफल संचालन के बाद प्रदेश के मा. मुख्यमंत्री हरीश रावत जी ने कहा कि 'सभी की सहभागिता से श्री नंदा देवी राजजात को सफलतापूर्वक संचालित किया गया। सहभागिता की इस भावना को आगे भी बनाए रखना होगा। इस बात पर विचार किया जा रहा है कि प्रतिवर्ष होने वाली वेदनी तक की लोकजात में भी राज्य सरकार सहयोगी की भूमिका में रहे। साथ ही यहां के आस–पास नए ट्रेकिंग रूट भी विकसित किए जायंगे। परंतु इसमें पूरा ध्यान रखा जाएगा कि हमारे बुग्याल, जड़ी–बूटियां, व प्रकृति को नुकसान ना हो। श्रीनंदा देवी राजजात जनभावना की यात्रा थी। स्थानीय लोगों की सहभागिता से विश्व की सबसे बड़ी धार्मिक पैदल यात्रा को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया। राजजात समिति, शासन–प्रशासन, पुलिस, एसडीआरफ, आईटीबीपी, एसएसबी, निम व अन्य संस्थाओं ने अपने कर्तव्यों से बढ़कर काम किया। हमें 'बियोंड द ड्यूटी' की इस भावना को हमेशा बनाकर रखना होगा।'

4. आगामी राजजात हेतु सुझाव

वाण से आगे की यात्रा में शामिल होने के लिए यात्रियों के बायोमेट्रिक रजिट्रेशन और मेडिकल परीक्षण की व्यवस्था की गई थी। इसका उद्धेश्य यात्रियों की पहचान को संकलित करना (ताकि कोई दुर्धटना एवं अन्य परिस्थितियों में यात्रियों की आसानी से पहचान की जा सके) तथा मेडिकल परीक्षण से यदि यात्री दुर्गम रास्तों पर चलने के लिए फिट न हो तो उसे यात्रा न करने की सलाह देना था। वाण से पूर्व के हर पडाव पर यात्रियों को इसके लिए अनुरोध भी किया जा रहा था। परन्तु बायोमेट्रिक रजिट्रेशन और मेडिकल परीक्षण कराने के लिए चुस्त व्यवस्था न होने के कारण ज्यादातर यात्री बिना इस व्यवस्था को अपनाये ही वाण से आगे की यात्रा में शामिल हुए।

सुझाव यह है कि उत्तराखण्ड के उच्च हिमालय क्षेत्र में यात्रा करने वाले प्रत्येक पर्यटक और यात्री का बायोमेट्रिक रजिट्रेशन और मेडिकल परीक्षण अनिवार्य किया जाय। ताकि यात्राओं में होने वाली संभावित दुर्धटनाओं को कम किया जा सके। इस वर्ष नंदा लोकजात अगस्त माह में होगी। अतः इस जात में यह व्यवस्था कड़ाई से लागू की जानी चाहिए।

यात्रियों तक यात्रा संबधी सभी आवश्यक सूचनाओं को पंहुचाने के लिए पड़ावों पर एक ही केन्द्रियकृत व्यवस्था होने से उन स्थलों पर अनावश्यक भीड़ एकत्रित हुयी जिससे कई दिक्कतें सामने आयी। सुझाव है कि प्रत्येक पड़ाव पर कम से दो सूचना केन्द्र अवश्व हों। साथ ही सचल सूचना केन्द्र भी महत्वपूर्ण पड़ावों में सक्रिय हों तो कई परेशानियों से बचा जा सकता है।

राजजात मार्ग पर कूड़ा निस्तारण एक विकट समस्या थी। कोशिश की जानी चाहिए कि जगह–जगह पर यह इंगित किया जाय कि अनुपयोगी सामानों के निस्तारण के लिए प्रत्येक 200 मीटर पर कूड़ा रखने का स्थान है। कूडे को इधर–उधर फेकने वाले को टोका जाए और इसके लिए यात्रियों पर कड़ी नजर रखी जाय।

यह भी देखा गया कि यात्री अपने साथ सभी तरह के सामानों को लिए चल रहे थे। मुख्यतया पलास्टिक, कांच आदि को ले जाने और इस्तेमाल करने की कोई रोक नहीं थी। यद्यपि आयोजकों ने जरूरत से ज्यादा सामान और पर्यावरणीय दृष्टि से हानिकारक वस्तुओं के इस्तेमाल और इधर–उधर न फैंकने की अपील की गई थी। परन्तु इस अपील का कोई विशेष प्रभाव यात्रियों पर नहीं था। अतः आवश्यक है कि आगामी लोकजात यात्रा के लिए इस संबध में कड़े नियम बनाये जायं और उनका सख्ती से पालन किया जाय।

पूरे राजजात मार्ग पर अस्थाई और स्थाई शौचालयों का निमार्ण किया गया था। वाण तक स्थाई तो उसके बाद अस्थाई शौचालय बनाये गये। परन्तु निर्जन स्थानों बने यह शौचालय पानी की कमी के कारण सुचारू रूप में प्रयोग में नहीं आ पाये। आगे के लिए सुझाव है कि ऐसे अस्थाई शौचालय जिनमें टाइलट सीट सीधे गड्डे से जुडी हो का निर्माण किया जाय। जिससे कम से कम पानी से काम चलाया जा सके।

सरकार द्वारा निर्जन स्थानों पर नये पैदल यात्रा पथ बनाये गये थे। उच्च हिमालयी क्षेत्रों में कई जगहों पर ये यात्रा पथ यात्रियों के परेशानी का कारण बने। क्योंकि बारिश के कारण खोदी हुयी मिट्टी ने कीचड़ का रूप ले लिया था। इस कारण यात्रियों द्वारा निर्धारित यात्रा पथों पर न चलकर इधर–उधर जाने से नये रास्ते बनने लगे। जिससे पर्यावरणीय क्षति तो हुयी ही साथ ही दुर्घटना की संम्भावना भी बड़ने लग गयी थी। अतः आवश्यक है कि रास्तों के निर्माण के लिए कम से कम जमीन को खोदा जाय। कोशिश की जाय कि पैदल रास्ते पर मिट्टी के स्थान पर

पत्थरों का अधिक उपयोग हो। ताकि बारिश के कारण होने वाले कीचड़ से बचा जा सके।

यह एक महत्वपूर्ण सुझाव है कि संपूर्ण राजजात क्षेत्र (लगभग 280 किमी.) का गहन पारिस्थिकीय अध्ययन करके लोकजात और राजजात के लिए जुटाई जाने वाली अधिकतम भौतिक एवं अभौतिक सुविधाओं एवं व्यवस्थाओं का वैज्ञानिक दृष्टि से आंकलन किया जाय। साथ ही यात्रा काल में इस क्षेत्र के पर्यावरणीय संतुलन को ध्यान में रखते हुए मानवीय और अन्य व्यवस्थागत दबावों के प्रभावों को न्यूनतम करने के उपायों पर पूर्व में ही विचार किया जाना चाहिए।

यात्राओं के सफल संचालन के लिए कारगर और आधुनिक संचार सेवायें प्रर्याप्त एवं दुरस्त स्थिति में उपलब्ध होना परम आवश्यक है। इस दृष्टि से इस क्षेत्र को व्यापक नेटवर्किंग से जोड़ा जाना चाहिए।

संचार सुविधाओं के संबध में ही पूरे क्षेत्र में बदलते मौसम की स्थान–स्थान पर निरंतर सूचना प्रर्दशित की जानी चाहिए। आपातकालीन स्थिति के लिए सूचनातंत्र को बेहद कारगर बनाने की जरूरत है।

यह भी जरूरी है कि पूरे राजजात क्षेत्र के स्थानीय निवासियों को यात्रा के विविध संदर्भो के बारे में प्रशिक्षण दिया जाय। इस यात्रा से स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने वाले अवसरों से अवगत कराया जाय।

एक अति महत्वपूर्ण सुझाव यह है कि इस यात्रा में भाग लेने वाले समस्त लोगों का यात्रा से पूर्व विधिवत पंजीकरण करवा जाय। जिसमें यात्रा में शामिल व्यक्ति का पूरे विवरण के साथ स्वस्थता प्रमाणपत्र आवश्यक रूप में संलग्न हो। लोकजात और राजजात में शामिल या भाग लेने वाले यात्रियों की संख्या पूर्व में ही निर्धारित कर ली जानी चाहिए। यात्रा के प्रारम्भ स्थान से ही प्रत्येक यात्री के द्वारा साथ ले जाने वाले सामान की जांच एवं उसका रिकार्ड रखा जाना चाहिए। ताकि वापसी में अनुपयुक्त सामान को निष्प्रयोज करने में आसानी हो। यह संम्पूर्ण व्यवस्था वार्षिक लोकजात और राजजात दोनों के लिए समान रूप से लागू की जानी चाहिए। इससे यात्रा में अनावश्यक भीड़ को रोका जा सकता है, साथ ही यात्रा व्यवस्था के लिए आर्थिक मजबूती भी बड़ाई जा सकती है।

श्री नन्दादेवी राजजातः 2014 कार्यक्रम

दिनांक	पड़ाव	दूरी (किमी0)	समुद्रतल से ऊंचाई (मीटर में)
18 अगस्त	नौटी से ईड़ाबधाणी	10	1240
19 अगस्त	ईड़ाबधाणी से नौटी	10	1650
20 अगस्त	नौटी से कांसुवा	10	1530
21 अगस्त	कांसुवा से सेम	10	1530
22 अगस्त	सेम से कोटी	10	1630
23 अगस्त	कोटी से भगोती	12	1500
24 अगस्त	भगोती से कुलसारी	12	1050
25 अगस्त	कुलसारी से चेपड़ियूं	10	1165
26 अगस्त	चेपड़ियूं से नन्दकेशरी	05	1200
27 अगस्त	नन्दकेशरी से फल्दियागांव	10	1480
28 अगस्त	फल्दियागांव से मुन्दोली	10	1750
29 अगस्त	मुन्दोली से वाण	15	2450
30 अगस्त	वाण से गैरोली पातल	10	3032
31 अगस्त	गैरोल पातल से वेदनी	03	3450
01 सितम्बर	वेदनी से पातर नचौणियां	09	3650
02 सितम्बर	पातर नचौणियां से शिलासमुद्र	15	4210
03 सितम्बर	शिला समुद्र से होमकुण्ड होमकुण्ड से चन्दनियाघट	10 06	4450 4010
04 सितम्बर	चन्दनियाघट से सुतोल	18	2192
05 सितम्बर	सुतोल से घाट (सड़क मार्ग से)	25	1331
06 सितम्बर	घाट से नौटी (सड़क मार्ग से)	60	1650
07 सितम्बर	नौटी में समापन समारोह		

श्री नन्दादेवी राजजात–2014
संम्पूर्ण यात्रा पथ के पड़ावों एवं नजदीकी स्थानों में व्यक्तियों की आनुमानित उपस्थिति तथा अनुमानित व्यवसाय

पड़ाव	उपस्थित लोगों की संख्या	अन्य नजदीकी स्थानों पर संख्या	कुल उपस्थित लोगों की संख्या	अनुमानित व्यवसाय (रू0)
नौटी एवं ईड़ाबधाणी	5000	15000	20000	2000000.00
ईड़ाबधाणी एवं नौटी	10000	40000	50000	5000000.00
कांसुवा एवं नौटी	10000	10000	20000	2000000.00
कांसुवा एवं सेम	5000	10000	15000	1500000.00
सेम एवं कोटी	10000	15000	35000	3500000.00
कोटी एवं भगोती	10000	25000	35000	3500000.00
भगोती एवं कुलसारी	15000	15000	30000	3000000.00
कुलसारी एवं चेपड्यि	10000	15000	25000	2500000.00
चेपड्यूं एवं नन्दकेशरी	20000	20000	40000	4000000.00
नन्दकेशरी एवं फल्दियागांव	10000	20000	30000	3000000.00
फल्दियागांव एवं मुन्दोली	10000	25000	35000	3500000.00
मुन्दोली एवं वाण	15000	20000	35000	3500000.00
वाण एवं गैरोली पातल	5000	25000	30000	3000000.00
गैरोल पातल एवं वेदनी	30000	10000	40000	4000000.00
वेदनी एवं पातर नचौणियां	10000	10000	20000	2000000.00
पातरनचौणियां एवं शिलासमुद्र	15000	5000	20000	2000000.00
शिला समुद्र, होमकुण्ड एवं चन्दनियाघाट	10000	5000	15000	1500000.00
चन्दनियाघाट एवं सुतोल	10000	10000	20000	2000000.00
सुतोल एवं घाट	5000	5000	10000	1000000.00
घाट एवं नौटी	10000	5000	15000	1500000.00
			कुल अनुमानित व्यवसाय	**54000000.00**